मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के इतिहास विभाग द्वारा "भारत की वस्त्र विरासत" पर दो-दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय वर्चुअल कॉन्फ्रेंस का विधिवत् उद्घाटन

शुक्रवार, 3 दिसंबर, को इतिहास विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर; सभ्यता अध्ययन केंद्र एवं इंटस् इंटरनेशनल रिसर्च फाउंडेशन के संयुक्त तत्वाधान में भारत की वस्त्र विरासत पर दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय वर्चुअल कॉन्फ्रेंस की शुरूआत हुई। आयोजन सचिव डॉ. पीयूष भादविया, सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, मो.सु.वि. ने बताया कि उद्घाटन अवसर पर मुख्य वक्ता प्रो, अंजलि कारोलिया, महाराजा सियाजीराव विश्वविद्यालय, ने भारत की वस्त्र परंपरा पर ऐतिहासिक पहलुओं को बताते हुए, कहा कि हड़प्पा सभ्यता और वैदिक कालीन संस्कृति से भारत के वस्त्रों की प्रारंभिक जानकारी प्राप्त होती हैं। मोहनजोदड़ो के लोग आज से 5000 वर्ष पूर्व कपास का प्रयोग जानते थे। कई विदेशी यात्रियों ने अपने संस्मरण में भारत के विविध वस्त्रों का

वर्णन किया है। चाणक्य रचित अर्थशास्त्र में कई प्रकार के वस्तुओं एवं उनके बनाने की तकनीकों का वर्णन है। काशी नगर को सर्वोत्तम मलमल बनाने के लिए जाना जाता था। कालांतर में विदेशी संस्कृति के घुल-मिल जाने के कारण वस्त्र विविधताओं बढ़ी है, लेकिन अंग्रेजी राज में उद्योगों का ह्रास हुआ है। महात्मा गांधी ने इस विषय को समझा और आजादी के आंदोलन में खादी को बढ़ावा दिया।

आज भारत विश्व में हथकरघा उद्योग का 95 प्रतिशत हिस्सा रखता है,जो भारत की वस्त्र उद्योग उत्पादन का 15 प्रतिशत है। इसमें 77 प्रतिशत महिलाओं को रोजगार प्राप्त होता है। उन्होंने भारत की विविध वस्त्रों जैसे: बगरू, सांगानेरी, अज्रक, बंधनी, पटोला, तेलिया, रुमाल, पोचमपल्ली, लेहरिया, चुन्दरी, पशमीना, जरदोजी, चैबा रुमाल, फड परंपरा आदि की जानकारी प्रदान की। उन्होंने कहा कि भारत के हर क्षेत्र में वस्त्र उद्योग उत्पादन और उसकी विरासत आज भी जीवन्त है।

मुख्य अतिथि डॉ. अनामिका पाठक, निदेशक, टैक्सटाइल एंड क्लॉथिंग सेंटर, ने बताया कि वस्त्रों की विविधता जितनी भारत में है, शायद ही किसी देश में है। आदिकाल से सबसे प्रचलित उपहार वस्त्र ही रहा है। चाहे भगवान को चढ़ाना हो या रिश्तेदारों, मित्रों को भेंट में देना हो, जन्म से मृत्यु तक वस्त्र जुड़ा रहता है। उन्होंने करघा मशीन को भारत में विकसित बताया और कई प्रकार के रंगों और उसके बनाने की प्रक्रिया पर प्रकाश डाला। राजाओं द्वारा स्थापित कपड़े बनाने के कारखाने, तोषाखाना, की जानकारी प्रदान की।

विशिष्ट अतिथि रूस की प्रो. युजिनिया वेनिना, भारतीय अध्ययन केंद्र, रशियन एकेडमी ऑफ साइंसेज, मास्को राज्य विश्वविद्यालय, ने बताया कि उन सभी ज्ञान या वस्तुएं जो भारत ने विश्व को दी है, उसमें वस्त्र सबसे प्रमुख हैं। एक समय था, जब पूरे विश्व में भारत की वस्तुओं का कोई सानी नहीं था। ऐसा कपड़ा बनाया जाता था, जो एक अंगूठी से आर पार हो जाता था। औपनिवेषिक काल में यहां की वस्त्रोद्योग चरमरा गए। लेकिन विश्व को भारत का आभार मानना चाहिए कि इतनी वस्त्र विविधता इस महान राष्ट्र में पनपी और विश्वव्यापी होकर फैली।

अन्य विशिष्ट अतिथि वियतनाम के डॉ. फान आन टू ने थेरावाद तथा बौद्ध संस्कृति और भारतीय वस्त्र परंपरा पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि दक्षिण पूर्वी एशियाई देश वस्त्र संबंधी ज्ञान में भारत का आभार मानते हैं।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए रिटायर्ड कर्नल डॉ. विजयकांत चेन्जी, अध्यक्ष, इंडस इंटरनेशनल रिसर्च फाउंडेशन, ने वस्त्र परंपरा एवं विविधता को जीवित रखने में महिलाओं की श्रृंगार परंपरा का आभार जताया।

धन्यवाद ज्ञापित करते हुए डॉ विवेक भटनागर, रिसर्च निदेषक, सभ्यता अध्ययन केंद्र ने बताया कि भारत में सर्वप्रथम विज्ञापन सिल्क का मंदसौर में अभिलेख मिलता है।

उद्घाटन सत्र के प्रारंभ में अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत प्रो. दिग्विजय भटनागर, अध्यक्ष, इतिहास विभाग, मो.सु.वि. ने किया। कॉन्फ्रेंस के संरक्षक प्रो. सी. आर. सुथार, अधिष्ठाता, कला महाविद्यालय ने शुभकामनाएं संदेश दिया। इस कॉन्फ्रेंस में अमेरिका, पॉलैण्ड, अरमेनिया, लाटविया, लिथवानिया, रूस, वियतनाम, नेपाल एवं भारत के 54 प्रतिभागी हिस्सा ले कर पत्र-वाचन करेगें।